उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) रजत जयंती वर्ष (स्थापित 17 नवंबर, 1988)

R.N.I. No. 56386/92 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल सं./316/2012/2014

मासिक

उद्यमिता

ISSN : 0971-6211
Date of Posting 4th-7th
Date of Printing 1st

वर्ष : 23, अंक 5
सितंबर 2014
कीमत रु. 25/- मात्र

लघु उद्योग, स्वरोजगार व प्रबन्ध क्षेत्रों में मार्गदर्शक

दुबई का दिल जीता

इंदौर में 8 से 10 अक्टूबर तक आयोजित होने वाली ग्लोबल इन्नवेस्टर मीट में निवेशकों को आमंत्रित करने के लिए दुबई दौरे पर गए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान वहां के उद्योगपतियों का दिल जीतने में सफल रहे...

ई-मार्केटिंग
कृषि विपणन में नया आयाम

स्वरोजगार
से पाएं कामयाबी की मंजिल

A MONTHLY PUBLICATION ON SMALL INDUSTRY, SELF-EMPLOYMENT AND ENTREPRENEURSHIP

वर्ष 23 अंक 5

विवरणिका

सितंबर 2014

मुख्य आकर्षण

- मध्यप्रदेश आएँ, उद्योग लगाएँ 7
- रेडी टू ईट खाद्य पदार्थों को बनाएँ स्वरोजगार का जरिया 11
- किसानों की बहु-उपयोगी एवं हितैषी ई-मार्केटिंग 14
- फलों एवं सब्जियों में मूल्य संवर्धन से अधिक आय प्राप्त करें किसान महिलाएं 16
- रजनीगंधा उत्पादन की नूतन तकनीक 21
- लुप्तप्राय औषधि पादपों का संरक्षण 23

विशेष आकर्षण

- ग्राहक सेवा के सूत्र : बैंकों की पूँजी - ग्राहक 26
- अमरकंटक के आसपास मटर की फली का बढ़ता व्यापार 30
- नौकरी पोर्टल शुरु 32
- भारत की कृषि अर्थव्यवस्था का विश्लेषण 33

अन्य आकर्षण

- गेहूँ से एलर्जी सिलिएक रोग 35
- स्वरोजगार : आत्मनिर्भरता की राह में पाएं कामयाबी की मंजिल 37
- उद्यमिता : लघु उद्योग, स्वरोजगार और प्रबंध की त्रिवेणी 39
- प्रधानमंत्री जनधन योजना और सेडमैप ग्राहक सेवा केन्द्र 42
- कचरे से तैयार करें उत्तम खाद 44
- बेकार नहीं है फसल का कचरा 46
- विकास का नया दौर ग्रामीण बैंक 47

अन्य आकर्षण

- इक्कीसवीं सदी के चुनौतीपूर्ण कॅरिअर 48
- लहरों में कॅरिअर 51
- फल सब्जियों के प्रबंधन में कॅरिअर 53
- कार्यकारी संचालक ने की सेडमैप के कार्यों की समीक्षा 54
- सेडमैप और एनएसडीसी मिलकर शुरू करेंगे कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम 54
- सेना में भर्ती के लिए युवाओं को प्रशिक्षण 54
- वनोपज के विनाशविहीन विदोहन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 55
- ब्यूटी पॉर्लर प्रशिक्षण कार्यक्रम 55
- लघु वनोपज संग्रहण का प्रशिक्षण 56
- हाउस होल्ड असिस्टेंट का प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं को प्रमाण पत्र एवं स्टायफण्ड राशि का वितरण 56
- सेना भर्ती परीक्षा की पूर्व तैयारी हेतु राजगढ़ में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण 56

सेडमैप के आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रम

- औषधीय एवं सगंधीय पौध विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों का वार्षिक कैलेण्डर (रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम) 61
- इंदौर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों का वार्षिक कैलेण्डर (उद्यमिता जागरूकता शिविर, उद्यमिता विकास कार्यक्रम, कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम) 62

भारत की कृषि अर्थव्यवस्था का विश्लेषण

''भारत गाँवों का देश है और कृषि भारत की आत्मा है।''

महात्मा गाँधी

"Everything else can wait but not Agriculture."

Pandit Jawaharlal Nehru

"Indian agriculture is at the cross roads. Our population may reach 1750 million by 2050. Food grain production must be doubled and the area under irrigation and mechanisation should go up."

Prof. M.S. Swaminathan

उपरोक्त तीनों कथन भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को इंगित करते हैं। इसमें कोई भी दो राय नहीं है कि वर्तमान समय में भी कृषि को भारत में नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात् जब कभी भी कृषि को महत्व प्रदान नहीं किया गया तब भारतीय अर्थव्यवस्था अस्थिर होने लगती है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि अमेरिकन मंदी का सामना भारतीय अर्थव्यवस्था ने बखूबी किया, उसका प्रमुख कारण था कि भारतीय अर्थव्यवस्था में 65 प्रतिशत श्रमशक्ति कृषि एवं संबंधित क्रियाओं में संलग्न हैं। चूँकि हमारी अर्थव्यवस्था निर्यात पर निर्भर नहीं थी, अत: वैश्विक संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा तथा हम संकट से बचे रहे।

प्रत्येक राष्ट्र के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कृषि न केवल मानव जीवन का भरण-पोषण करती है वरन् उद्योगों को कच्चे माल की पूर्ति करती है। इसी कारण इसे उद्योगों की जननी माना जाता है। औद्योगिक विकास मूल रूप से कृषि विकास की ही देन है। इंग्लैण्ड, जर्मनी, सोवियत रूस, जापान आदि देशों में कृषिगत विकास ने ही तीव्र औद्योगीकरण के लिये सुदृढ़ आधार प्रदान किया है।

प्रो. लुईक, यूगोमापी, वारनर, किंग्लबर्जर आदि अर्थशास्त्रियों का विचार है कि अल्प विकसित देशों की विकास प्रक्रिया में कृषि को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिये।

वर्तमान समय में कृषि एक व्यवसाय के रूप में उभर कर आया है। परंपरागत ढंग से खेती करने वाले कृषक भी अब मानते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने से ही कृषि उत्पादन बढ़ा है। कृषि सभी अर्थव्यवस्थाओं में, चाहे उनका विकास का स्तर कुछ भी हो केन्द्रीय स्थिति में रहती है। यह मानव की भोजन और गैर खाद्य सामग्रियों की आपूर्ति करके उनकी मूल आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है। इसमें (1) खाद्यान्न, जैसे चावल, गेहूँ, मोटे अनाज और दालें, (2) व्यावसायिक फसलें जैसे तेल, बीज, कपास और गन्ना, (3) वृक्षारोपण फसलें जैसे चाय एवं कॉफी, (4) उद्यान कृषि फसलें जैसे फल, सब्जियाँ, फूल, मसाले, काजू और नारियल तथा इसके अतिरिक्त संबद्ध गतिविधियों जैसे दूध और डेरी उत्पादन, मुर्गी पालन, मछली पालन कृषि क्षेत्र में सम्मिलित हैं।

अधिकतर विकसित एवं औद्योगिक देशों की उन्नति के लिये प्रथम सोपान कृषि ही है।

कृषि का महत्व : विकास अर्थशास्त्री प्रो. कुजनेट्स के अनुसार अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि मुख्य रूप से तीन प्रकार से सहयोग करती है तथा आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तेज करती है, इस प्रक्रिया के 3 बिन्दु हैं :

अ. साधन अंशदान (Factor Contribution)
ब. उत्पाद अंशदान (Product Contribution)
स. विपणन अंशदान (Market Contribution)

(अ) साधन अंशदान : कृषि में विकास होने पर कुछ साधनों का दूसरे क्षेत्र में हस्तान्तरण होता है। संसाधन उत्पादन में सहायता करते हैं। इन संसाधनों का गैर कृषि क्षेत्र में हस्तांतरण साधन अंशदान है। यह साधन अंशदान निम्न प्रकार से है :

(क) पूँजी की पूर्ति : भौतिक पूँजी को प्राप्त करने के लिये गैर कृषि क्षेत्र को पूँजी की आवश्यकता होती है। गैर कृषि क्षेत्र में पूँजी का हस्तांतरण ऐच्छिक एवं अनिवार्य हो सकता है। यह ऐच्छिक तब हो सकता है जबकि कृषक अपनी बचत को उद्योगों में लगाता है। अनिवार्य पूँजी का प्रवाह सरकार द्वारा करों के रूप में लिया जाता है। शासन जब कृषि पर कर लगाती है तथा करों से प्राप्त आय को गैर कृषि क्षेत्र पर व्यय करती है।

अर्थशास्त्री नर्क्से ने भी बताया है कि कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में जहाँ जनसंख्या का घनत्व काफी ऊंचा होता है वहाँ शून्य श्रम कीमत विद्यमान रहती है। इस श्रम शक्ति की सीमान्त उत्पादकता शून्य रहती है। अन्य शब्दों में अल्पविकसित देशों में छिपी हुई बेरोजगारी विद्यमान रहती है। इस श्रम शक्ति को कृषि क्षेत्र से हटाकर गैर कृषि क्षेत्र में जैसे सड़कें बनाना, नहरों का निर्माण करना, आदि में प्रयोग करने से गैर कृषि क्षेत्र का विकास किया जा सकता है।

(ख) श्रम की पूर्ति : कृषि क्षेत्र, गैर कृषि क्षेत्र को श्रम की पूर्ति करता है। गैर कृषि क्षेत्र के श्रम की पूर्ति के तीन स्त्रोत हैं

(अ) जनसंख्या वृद्धि

(ब) प्रवासिता

(स) खेतिहर जनसंख्या

प्रथम दो स्त्रोत पर्याप्त नहीं हैं। जनसंख्या वृद्धि धीमी गति से श्रम की पूर्ति बढ़ाती है। प्रवासिता में भी धर्म, संस्कृति, भाषा एवं रीति-रिवाज के अंतर के कारण संभव नहीं हो पाता। इस प्रकार तृतीय स्त्रोत खेतिहर मजदूर ही गैर कृषि क्षेत्र को श्रम की पूर्ति करता है। यह हस्तांतरण सरल नहीं है। देश में जनसंख्या यदि अधिक है तो श्रम का हस्तांतरण कोई समस्या पैदा नहीं करता है। लेकिन जनसंख्या कम है तो हस्तांतरण कृषि क्षेत्र में उत्पादन को कम कर देगा। यह विकास की दृष्टि से वांछनीय नहीं है। गैर कृषि को पूर्व की अपेक्षा अधिक कच्चे माल की आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त जो जनसंख्या गैर कृषि को हस्तांतरित हुई है उनका उपभोग व्यय बढ़ जाएगा क्योंकि उसकी आय बढ़ गई है।

(ब) उत्पाद अंशदान : कृषि उत्पादन का अंशदान देश के विकास में सहायता प्रदान करता है। इसके दो प्रकार हैं :

(क) वस्तु मजदूरी की पूर्ति : गैर कृषि क्षेत्र का विकास करने के लिए कृषि क्षेत्र से जनसंख्या को विवर्तित करना पड़ता है। कृषि क्षेत्र में विवर्तित जनसंख्या के लिए भोज्य पदार्थों की मांग बढ़ती है। इसके फलस्वरूप अनाज की कीमत बढ़ जाती है। इससे उनका उपयोग भी बढ़ जाता है। अर्थव्यवस्था में जैसे-जैसे विकास होता जाता है उसकी कृषि पर निर्भरता बढ़ती जाती है। गैर कृषि क्षेत्र की कृषि पर नर्भरता वस्तु मजदूरी के रूप में ज्यादा सशक्त हो जाती है।

(ख) औद्योगिक क्षेत्र को कच्चे माल की पूर्ति

कृषि क्षेत्र, गैर कृषि क्षेत्र को कच्चे माल की पूर्ति करता है - विभिन्न देशों के आर्थिक विकास का इतिहास बताता है कि सर्वप्रथम कृषि आधारित उद्योगों के द्वारा ही आर्थिक विकास तीव्र गति से हुआ है। इसका कारण यह था कि इन उद्योगों का संचालन सरल था। इसके अतिरिक्त खेतिहर मजदूरों को इन उद्योगों में सरलता से लगाया जा सकता है क्योंकि तकनीक जटिल नहीं थी।

(स) विपणन अंशदान : कृषि क्षेत्र, गैर कृषि क्षेत्र की ओर वस्तुओं के प्रवाह पर महत्व देता है। इससे अन्य क्षेत्रों का विकास तीव्र गति से होता है। इस अंशदान को भी निम्न बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है :

(क) अन्य क्षेत्रों के उत्पाद के लिए बाजार का विस्तार : कृषि के विकास के लिए भी बाजार का विस्तार जरूरी है। विकास की प्रारम्भिक अवस्था में कृषि क्षेत्र, गैर कृषि क्षेत्र के लिए बाजार का निर्माण करता है। गैर कृषि क्षेत्र का विकास होने लगता है तो इसके परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र में भी आय बढ़ने लगती है। आय बढ़ने से उपभोग एवं उत्पादन की वस्तुओं की मांग बढ़ती है तथा बाजार का विस्तार होने लगता है। बाजार का विस्तार माँग में वृद्धि करता है। यह कृषि क्षेत्र के लिए भी आवश्यक है।

(ख) कृषि पदार्थों की अन्य क्षेत्रों में भी पूर्ति : कृषि विकास एक अन्य दृष्टिकोण से भी अर्थव्यवस्था के विकास में लाभप्रद होती है। कृषि का विकास होने पर बहुत से गैर कृषि संगठन कृषि पदार्थों को बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं। ये संगठन पैकिंग, वितरण तथा प्रक्रिया से संबंधित क्रियाओं में संलग्न होते हैं। डॉ. नाग ने बताया है कि कृषि विकास कृषि आगतों तथा उपभोग पदार्थों के प्रति माँग पैदा करता है तथा औद्योगिक क्षेत्र का विकास होता है। इस प्रकार अर्थव्यवस्था में औद्योगिक क्षेत्र का विकास होता है तो कृषि क्षेत्र का भी विकास होता है। औद्योगिक क्षेत्र कृषि क्षेत्र को आधुनिक तकनीक तथा कृषि उत्पादों के लिए बाजार का विस्तार करता है।

(ग) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास : कृषि क्षेत्र का विकास होने के साथ कृषि उत्पादन में जो वृद्धि होती है उसे विदेशी बाजारों में बेचा जा सकता है। विकास का इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि थाइलैंड में चावल के उत्पादन में वृद्धि होने पर थाईलैंड ने विदेशों को चावल विक्रय कर विदेशी पूँजी तथा उपभोग पदार्थों का आयात किया। तात्पर्य यह है कि कृषि उत्पादन में वृद्धि होने से ही संपूर्ण अर्थव्यवस्था को गति मिलती है। अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार को गति मिलती है तथा आवश्यक तकनीकि एवं उपभोग पदार्थों का आयात सहज

हो जाता है।

सकल घरेलु उत्पाद में योगदान : भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का विकास अनिवार्य एवं अत्यंत महत्वपूर्ण है। निम्न तालिका प्रदर्शित करती है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं संबद्ध क्रियाओं का अंशदान लगातार घटता जा रहा है।

तालिका 1
भारतीय अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान

वर्ष	अंशदान
1950-51	59 प्रतिशत
1960-61	54 प्रतिशत
1970-71	48 प्रतिशत
1980-81	40 प्रतिशत
1991-92	32.75 प्रतिशत
1996-97	27.5 प्रतिशत
2008-09	17.1 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका यह प्रदर्शित कर रही है कि भारत में कृषि क्षेत्र के अंशदान में गिरावट हो रही है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व नहीं है।

किसी देश की अर्थव्यवस्था जैसे-जैसे विकास की उच्चतर अवस्थाओं में विकास करती है उसकी राष्ट्रीय आय में कृषि का अंशदान क्रमश: घटता जाता है। यह इस बात को दर्शाती है कि द्वितीयक अर्थात औद्योगिक एवं तृतीयक अर्थात सेवा क्षेत्रों से उत्पन्न आय का अनुपात प्राथमिक व्यवसाय से उत्पन्न आय के अनुपात की अपेक्षा अधिक तीव्रता से बढ़ती है। भारतीय अर्थव्यवस्था जैसे-जैसे विकसित हो रही है, औद्योगिक उत्पादन दौड़ता हुआ बढ़ता है, जबकि कृषि उत्पादन रेंगता हुआ बढ़ता है। परिणामस्वरूप अनुपातिक अंशदान क्रमश: घटता जाता है।

■ **डॉ. सोनाली भंडारी जैन,**
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
माता गुजरी महिला महाविद्यालय, जबलपुर

गेहूँ से एलर्जी सीलिएक रोग

एलर्जी से लगभग सभी लोग परिचित हैं। यह एलर्जी मिट्टी से नमी से या किसी खास पदार्थ अथवा दवा के सेवन से हो सकती है। ऐसा ही एक एलर्जी रोग है - सीलिएक रोग। इस रोग में रोगी को ग्लूटेन (गेहूँ में विद्यमान एक विशेष प्रकार का प्रोटीन) से एलर्जी होती है। इस रोग से प्रभावित रोगी में ग्लूटेन, आहार के माध्यम से उसके पाचन तंत्र की आंतों को नष्ट कर देता है तथा इस प्रकार आंतों द्वारा पाचन किए गए भोजन का अवशोषण नहीं हो पाता है। इससे रोगी में पौष्टिक तत्वों की कमी हो जाती है। इस रोग के रोगी में उल्टी-दस्त का लगातार बने रहना, पेट फूलना, शरीर निढ़ाल रहना एवं शारीरिक वृद्धि नहीं होना या कम होना जैसे लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। वस्तुत: सीलिएक रोग में गेहूँ से एलर्जी के कारण उसमें पाए जाने वाले 'ग्लेटेन' प्रोटीन का शरीर में पाचन नहीं हो पाता है और आंत की अंदरुनी परत (विलाई) नष्ट होने लगती है। गेहूँ से मुख्य रूप में तीन प्रकार के रोग हो सकते हैं, यथा - गेहूँ से एलर्जी, ग्लूटेन सहन नहीं कर पाना तथा गेहूँ एवं उसके उत्पादों से होने वाली एलर्जी।

1. **गेहूँ से एलर्जी** - इसमें शरीर, गेहूँ में पाये जाने वाले प्रोटीन एल्बूमिन, ग्लोबुलीन, ग्लीएडिन एवं ग्लूटेन के प्रति इम्यूनो ग्लोबुलिन ई अर्थात् आईजीई एंटीबाडीज के रूप में प्रतिक्रिया दर्शाता है। इस प्रकार के रोग में अर्टीकोरिया, एक्जिमा, पेट में ऐंठन-मरोड़ उबकाई, उल्टी आना मुंह में छाले अस्थमा आदि प्रभाव दिखाई देते हैं।
2. **ग्लेटेन सहन नहीं कर पाना** - इस प्रकार के सीलिएक रोग में रोगी का शरीर ग्लूटेन पदार्थ सहन नहीं कर पाता है। इसे ग्लूटेन ऐट्रोपेथी कहते हैं।